कहानी

कितनी रोटियां बनेगी ?

संध्या होनगौणटीकर

अनुवादक: डॉ. मैत्री सिंह

आठ बनाओ। जरा पतली बनाना सुनंदाबाई, कल कितनी मोटी रोटियां बना दी, मेरे बेटे ने खाना नहीं खाया, ऐसा करने से नहीं चलेगा। कड़क होकर कहा राधा बाई ने।

होता हैं।। हमे सब दिन मूड नहीं रहता, चाहो तो बनवा लो नहीं तो छोड़ दो, लकड़ी तोड़ने की तरह जवाब देकर सुनंदाबाई ज्वार के आटे में गरम पानी मिलने लगी। सूरत पर व्यग्रता छा गई। गुस्सा आने से तवा गैस पर चढ़कर ओर दिनों से ज्यादा जोर से रोटी बनाने लगी। रोटी तवे पर फूलने से उसकी सुगंध घर भर में फैल गई।

पता नहीं क्यों यह औरत गरम हो रही हैं सोचते हुए राधा बाई नरमी से पूछने लगी "क्या बात है सुनंदाबाई आज मूड नहीं है, क्या हुआ?"

क्या हो सकता है, वही रोज की झुक झींक झींक।। पेट के लिए... इतना कहते वह चुप हो गई आवाज में तीखापन था।

राधा बाई ने दूसरे स्टोव पर कुकर चढ़ा दिया।

सुनंदा ने कहा नींबू हो तो जरा शरबत बना देना भाभी, अधिकार भरे असहनीय स्वर में जिसे सुन कर राधा शरबत बनाने लगी।

रोटी बना लेने पर पूछा सब घरों की रोटी बन गई या ओर बनानी हैं? और शरबत का ग्लास सुनंदा के सामने रख दिया।

जिसे पी कर उसने सूरत बिगाड़ दी कहा गरम है बर्फ डालती हूं और उठकर फ्रिज से बर्फ निकल लाई। राधा बाई को बर्फ के लिए पूछा उसने मना किया। ऐसा बर्ताव सुनंदा हर घर में करती थी। चायपत्ती, शक्कर, दूध की मांग से छुटकारा पाने के लिए शरबत बना देना राधा बाई को आसान लगा। ठंडा शरबत पीने से गुस्सा भी ठंडा हुआ। कहने लगी अभी ओर दो घर की रोटी बनानी हैं। इन गर्मियों में काम निपटता ही नहीं। इस प्रचंड धूप में पैदल जाना होगा। घर दूर भी हैं। हमारे जैसा कष्ट किसी को न आए। ऊपर से तुम लोग शिकायत करते हो कि रोटी ऐसी बनी हैं, वैसी बनी हैं।

राधा बाई ने कहा सच है धूप तो है ऑटो से जाओ।

उसने कहा तुम पगार बाधाओं तो टैक्सी से जाऊंगी।

ग्लास में बचे बर्फ को निगलते हुए कहा।

ये सब कोरी बातें हैं तनख्वाह बढ़ाना किसी से होता नहीं, सुनंदा बड़बड़ाने लगी। शरबत का ग्लास धोते हुए उसने पूछा कल से रोटी बनाने के लिए आऊं या नहीं बता दो, ओर जवाब की राह देखने लगी। राधा बाई बोली यह तुम्हारे ओर मेरे लिए कोई नई बात नहीं हैं। आज कई वर्ष बीत गए तुम मुझे नहीं छोड़ती और मैं तुम्हे।।नखरे मत करो कल रोज की तरह आओ, हंसकर उसे भेज दिया।

सुनंदा है कर लिए राधा बाई का घर नया नहीं था। बचपन से उसकी मां कमलाबाई के साथ रोटी बनाने के लिए आती रहती थी। कमलाबाई बहुत सब्र करनेवाली स्त्री थी। कभी वह रोटी बनाने के बाद भी राधा बाई के हाथ से काम छीन कर खुद करती, तरकारी की सफाई, पूजा के बर्तन की सफाई, आटा छान कर रखना इत्यादि बिना स्वार्थ के कर देती। लेकिन सुनंदाबाई हर काम को पैसे से तौलती, वह कहती हम रुपए के लिए ही मेहनत करते हैं। अपनी आर्थिक नीति बताती।कोई उसकी मां के स्वभाव का वर्णन करने पर कहती वह समय गया, अब पहले रुपया, मेरी मां भोली थी, मुझे पढ़ाया लिखाया नहीं, अनाड़ी से मेरा विवाह कर दिया मुझे आग में झोंक दिया।

बेचारी कमलाबाई भी क्या करती? उसने छोटी आयु में पति को खो दिया। ससुराल और मायके से सहारा न मिलने पर घर घर रोटी पकाने का काम करने लगी। शादी के एक साल में ही जुड़वां बच्चे। अगले साल एक्सीडेंट में पति चल बसा। मदद करने के बजाय रिश्तेदारों ने विधवा स्त्री को समाज के नियम पालने पर विवश किया उसके बाल मुंडवा दिए। कमला बाई दीवार पर लगे छोटे आईने में खुद का मुंडा सिर देखती ओर रोती। यह कहना मुश्किल है कि वह पति खोने पर दुखी हैं या बाल खोने पर। वह अपने आप से बातें करने लगी। वह बातें बालों पर ही केंद्रित होती। हमेशा बालों का जुड़ा बांधना, चोटी करना या कंघी करना जैसी क्रियाएं करती। छोटी बच्चियां दिखने पर उनकी चोटी पकड़ लेती कहती "मेरे बाल तूने क्यों लटकाए हैं इधर ला" और लड़ने लगती।

कमलाबाई को हठी बनाने वाले अब कहां हैं पता नहीं लेकिन पटरी से हटी उसकी जीवन शैली को ठीक करने कोई आगे नहीं आया। ऐसे प्राणियों को बचाने की जिम्मेदारी ईश्वर किसे देता होगा? तब राधाबाई के ससुर पी। के। देसाई शहर में प्रगतिशील विचारों के प्रबल समर्थक पेशे से वकील, आगे आए, उनके अपने समुदाय की महिला के मन में यह बात कौंधी और उन्होंने न केवल कमलाबाई को अपने घर खाना बनाने के लिए नियुक्त किया अपितु उन्हें बाल रखने की सलाह दी।

पहले जैसे लंबे बाल उग आए। लेकिन अब कमलाबाई ने उन पर ध्यान नहीं दिया। उसके दिल का दर्द कम नहीं हुआ। एक तरह का अंधेरा उसके मन मस्तिष्क पर छा गया। कमला बाई सिर्फ वही करती जो उस से कहा जाता। बच्चों की जिम्मेदारी उस पर थी। देसाई के घर में एक नौकरानी की जरूरत थी। कमलाबाई उनके घर मजदूरी करते हुए अपने दिन व्यतीत करने लगी।

कमलाबाई की बेटी सुनंदा एक खूबसूरत लड़की हैं। देसाई के घर पली बढ़ी ऐशो आराम से रहनेवाली। लेकिन केशव सुनंदा का भाई एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो काम में ईमानदार, निस्वार्थ, सही गलत की पहचान न रखनेवाला लड़का जिसके काम में तेजी नहीं हैं।

चमकीले पीटे आटे के रंग वाली लड़की सुनंदा कई लड़कों के आकर्षण का केंद्र हैं। तीखी नाक न होने पर भी चमकीली आंखें और गोरे रंग ने सब कुछ ढक दिया। उसकी तरह अमीर घराने या जिंदगी में सेट हो चुके लड़के शादी के लिए तैयार नहीं होते। सुनंदा पर खाना बनानेवाली की लड़की का नाम जुड़ गया था। कमलाबाई को उसकी योग्यता के अनुसार वरदान प्राप्त हुआ था। फिर भी कमलाबाई बेटी के विवाह को लेकर चिंतित थी। उसने लड़कों के बारे में पूछताछ की लेकिन अपनी जिम्मेदारी के बारे में नहीं बताया। उसे बेचारी समझ कर कई लोगों ने रिश्ते भी बताए। अंततः पंचमुखी हनुमान देव मंदिर के प्राणेश के साथ विवाह समारोह को अंतिम रूप दिया गया। देसाई ने सारी जिम्मेदारी ली राहत महसूस किया कि कमलाबाई का बोझ कम हुआ।

नई जिंदगी का अनुभव लेने से पहले सुनंदा ने एक के बाद एक तीन बच्चों को जन्म दिया उसने अपने यौवन का जश्न नहीं मनाया। उसे इस बात का पता नहीं था कि रसोई में पड़े खाली डिब्बे कैसे भरेंगे। यह सुनंदा के लिए सब से बड़ी चुनौती थी। प्राणेश ने इस जवाबदारी को बिना किसी लाभ के उठाया। उसके पास वह भक्ति नहीं थी जो एक वैदिक अभ्यासी के पास होनी चाहिए। बच्चों के प्रति प्यार, देखभाल की भावना भी नही थी। दुर्व्यवहार, व्यसन के कारण वह लोगों के अविश्वास का पात्र बन गया। भक्तों की भेंट, मंदिर के धन का दुरुपयोग करने के कारण थोड़े ही दिनों में ट्रस्ट ने पूजा कार्य से छुट्टी दे दी।

तीन बच्चों को पालने की जवाबदारी सुनंदा की तीस पर व्यसनी पति के साथ जीवन बिताना कष्टकर था। फिर भी सुनंदा ने हार न मानते हुए प्राणेश के लिए कई नौकरियों की व्यवस्था की। उस से काम करवाने की कोशिश की। पड़ोस के किराना दुकान में काम करने की सलाह दी। समय से जाने को कहा "पुरोहिती तुमसे न होगी, तुमने गलत राह का चुनाव कर लिया हैं।" किराना दुकान में प्राणेश काम नहीं कर पाया।

सुनंदा ने फिर किसी और के आगे विनती की घर घर जाकर दूध दुहने लगी, प्राणेश को समय पर दूध पहुंचाने की नौकरी लगाई, कुल मिलाकर उसे जीवन के सफर में साथी बनाने की भरपूर कोशिश की। समय पर दूध न पहुंचाने के कारण यह काम भी हाथ से निकल गया। दोनों में अनबन होने लगी। एक दिन प्राणेश यह कहते हुए घर से निकल गया तू मुझे सबक सिखाना चाहती हैं,वह बार बार यही करने लगा। स्वाभिमान गिरवी रख कर लज्जा हीन हो घर आना बिना बताए चले जाना सामान्य बात हो गई। तीन बार यह घटना होने के बाद अब सुनंदा जीवन की गाड़ी के लिए प्राणेश को आवश्यक नहीं मानती थी। पड़ोसियों ने आकर सुनंदा को सांत्वना दी।लेकिन सुनंदा ने हार नहीं मानी। कर्जदार घर पर आने लगे सुनंदा ने वास्तविकता बताई जिसके कारण उनका मुंह बंद हुआ। अब सुनंदा ने पति की ओर से कोई उम्मीद न रखी। प्यार, सम्मान न सही प्राणेश ने सुनंदा को अनोखा तोहफा दिया जिसके कारण सुनंदा ने प्राणेश को ठुकरा दिया इसके बाद वह फिर कभी घर नहीं आया।

किंतु कभी सुनंदा प्राणेश को याद कर रोती संदेह होता कि वह जीवित भी है या नहीं,अब धीरे धीरे उसके मन से प्राणेश का चेहरा भी फीका पड़ गया था। एक बार पेटी से उनकी फोटो मिली। कई विचार उसके मन में कौंध गए। अगर वह मर गया होगा तो मुझे क्या करना चाहिए? मांगलिक कार्यक्रम की रसोई में न जाएं ? नहीं जाएंगे तो।।।? यही सोचते रात कर गई कि बच्चों का पेट कैसे ढकें ? अकेली, अधीर, सुनंदा के आंखें जागने के कारण लाल हो गई थी।

सुनंदा साहसी महिला थी। उसने घर घर ज्वार की रोटी (कर्नाटक का मुख्य आहार जिसे भकरी या भाखर कहा जाता हैं) चपाती बनाने का काम शुरू किया। अपनी दुख भरी कहानी सुनाई पर आत्माभिमान को बनाए रखा, और बच्चों का पोषण किया। कोई उस से पूछता "तुम्हारा पति कहां हैं ?" यह प्रश्न लोग संभवतः इसलिए पूछते हैं कि महिला परिवार चलाने में सक्षम नहीं होती या उन्हें लगता हैं कि औरत बच्चों की देखभाल नहीं कर सकती। सुनंदा को कोई यह ताना देते तो वह तुरन्त फटकारते कहती "तुम मेरे पति के दोस्त हो क्या ? वह जहां होगा जैसा होगा इस बात की चिंता मैं करूंगी, तुम अपना काम देखो।"

जैसे दिन बीतते गये, सुनंदा का परिवार बढ़ता गया। उसने विवाह, यज्ञोपवीत, गृहप्रवेश जैसे समारोह में रसोई की जिम्मेदारी संभाल ली। कम करने वालों की संख्या बढ़ी, जिनमें रमेश उसका करीबी था। भले ही वह सुनंदा से उम्र में छोटा था। कई लोगों के लिए यह नई अनुभूति थी। जो भी उन्हें देखते हंसते। इस औरत का पति कहां है? उनकी उत्सुकता बढ़ी, सुनंदा ने इस बात को पहचान लिया, ताने सहन करना मुश्किल हुआ तो कभी वह झूठ कहने लगी "कल मेरा पति घर आया था, इसलिए मैं काम पर नहीं आ सकी।" अन्य प्रतिद्वंदी

रसोइए सुनंदा को नीचा दिखाना चाहते थे। निजी जीवन की सभी कठिनाइयों के बावजूद सुनंदा अपनी उदारता से उसके यहां कामकाजी लोगों की चहेती बन गई। कभी वह अपनी तरह के कम से थके लड़के लड़कियों को नई मशहूर फिल्म का पहला शो बालकनी टिकट ले जाती। सब कहते दीदी पैसा नहीं हैं, सुनंदा भी हंसकर कहती पैसा मांगा किसने हैं?

शुरू में रसोइए आपस में बोलने लगे, "वह औरत खुद को समझती क्या हैं, कब तक हमारी बराबरी करेगी, कितने दिन टिक सकेगी देख लेंगे।" यह बात उड़ते उड़ते सुनंदा तक पहुंची तो उसने भी जवाब दिया "इन सब को बड़े उत्सवों में खाना पकाना और चम्मच हिलाना मैंने ही सिखाया।" और इस तरह बात वहीं रुक जाती आगे नहीं बढ़ पाती।

सुनंदा का साहस देखने योग्य था। उत्सवों के मौसम में वह नए लड़के लड़कियों की मदद करती, कभी उन्हें रोटी बनाने भेजती खुद उत्सवों की रसोई संभालती। कभी छिप कर समारोह में जाती नए लोगों का उत्साह बढ़ाती।

अब सुनंदा ने बड़े आयोजनों के लिए बर्तन किराए पर लेने शुरू कर दिए। साथ ही घरों में होने वाले छोटे मोटे आयोजनों के लिए टेबल, कुर्सी, मिनरल वाटर, घर की सजावट, खोया , दूध, दही, केले के पत्ते(परोसने के लिए) आदि का आयोजन करने लगी। लोग उसे ऑर्डर देकर निश्चिंत हो जाते, सुनंदा में और अच्छा काम करने की आशा जागने लगी।

सुनंदा के इलाके के प्रसिद्ध रसोइए जल भुन गए, आपस में बोलने लगे, "ऐसा ही चलता रहा तो सुनंदा एक कल्याण मंडप (मैरिज हॉल) बना देगी और हमें वह काम करना पड़ेगा। एक ने कहा, उसकी वाह वाही रमेश के कारण हो रही हैं। इसे रस्ते से हटाना होगा। रमेश उसे नहीं छोड़ेगा बल्कि सुनंदा की साड़ी से फांसी लगा लेगा। एक ने कहा, "रमेश ने सुनंदा के पति की जगह ले ली हैं।।कहते हुए भद्दी हंसी हंसने लगे।" यह बातें सुनंदा के कानों में पड़ती तो वह अन्यमनस्क हो जाती। ऐसे समय रोटियां मोटी और बेस्वाद बनती। सर दिन व्यग्रता से बीतता। वह सोचती जो लोग मेरे बारे में ऐसी बातें करते हैं वे स्वयं समाज में कितनी पवित्रता बनाए रखते हैं? फिर वे ही कहते फिरते हैं सुनंदा जैसे लोगों की छाया भी उनके घर की बेटियों पर न पड़े। लेकिन इन सब की चिंता मुझे नहीं करनी चाहिए।

समुद्र किनारे घरौंदा बनाते समय पैर के ऊपर सावधानी से रेती दबा कर धीरे से पैर को हटा लिया जाता हैं फिर लहरें आकर उस घरौंदे को अपने में समेत लेती हैं, जीवन भी ऐसा ही हैं। सुनंदा सोचने लगी मेरे हाथ का बना सांभर मेरे दुखों का नमक घुलने से स्वादिष्ट बनता हैं। इन बातों की क्या चिंता करना? और झटके से दुबारा अपने काम में लग जाती हैं।

"इस दुनिया में भगवान ने साथ लोगों को एक दूसरे की तरह बनाया हैं, जो मर गया वह भी उसके जैसा ही होगा, सुनंदा ऊंची आवाज में बोलने लगी।

हमारे प्रदेश में बंजारा टांडे के नजदीक एक शव मिला है जो हनुमान मंदिर के पुजारी का हैं। एक बंजारे आम बेचने आई वो बोलने लगी, यह सूचना रमेश ने सुनंदा को दी।

प्राणेश भाई का देहांत हुआ हैं। चलो सरकारी अस्पताल चलते हैं।" सुनंदा अप्रतिभ होकर जिद करने लगी वह प्राणेश नहीं हैं। आसपास के लोग सुनकर सांत्वना देने आ पहुंचे। बीच में फुसफुसाहट कि "बीवी ने घर से निकल दिया, शव सड़क पर पड़ा हैं।।। लेकिन सुनंदा ने हठ पकड़ा, "नहीं यह प्राणेश नहीं हो सकता। परसों ही फोन किया था कि तिरुपति का रहा हूं, मैने प्रसाद लाने कहा। उनके साथ प्रसाद हैं क्या??" सुनंदा ने वकील की तरह अपना प्वाइंट रखा।

यह अब झूठ हैं, इस बात को रमेश भी अच्छी तरह जनता था, पर जग हंसाई न हो, इसलिए सरकारी अस्पताल, जहां शव रखा गया था, जाना चाहता था। बच्चे भी जाने की जिद करने लगे। सुनंदा ने कहा "पता नहीं, किसका शव हैं,तुम सब वहां आकर क्या करोगे? मैं ही चली जाती हूं।" सुनंदा को पूरा विश्वास था कि मैं इसे भी झूठा साबित करूंगी।

सुनंदा का शांत और स्थिर चेहरा देख कर आसपास के लोग उठ कर जाने लगे, प्राणेश नहीं हैं।।उन्हें रमेश समझने लगा, "प्राणेश की जांघ पर एक निशान था, सुनंदाबाई ने उस निशान को ढूंढा, वह कहीं नहीं मिला। पुलिस से भी पूछा, उन्होंने भी इनकार कर दिया। साथ में कोई सामान नहीं, तिरुपति का प्रसाद भी नहीं,और तो और शरीर पर जनेऊ भी नहीं था," कहते हुए अनिवार्य हंसी हंसने लगा।

लोग भी रमेश की बातें सुनकर विश्वास करने का नाटक करने लगे। "सुबह से फिजूल की बात पर परेशान हो रहे हैं इसका कोई मतलब नहीं, कहते बड़ा सा मुंह खोले जम्हाई लेने लगा, मानो कह रहा हो अब तुम अब अपने घर जाओ।"

सुनंदा ने सिर से स्नान किया ऊंची आवाज में बेटी से बोली "जरा कड़क चाय बना देना सिर में बहुत दर्द हो रहा हैं," और आईने के सामने माथे पर कुमकुम लगाने बढ़ी तब प्राणेश के जांघ का निशान सुनंदा के चेहरे के पीछे डरा रहा था।